खंड – क

1.(क) 'पुनर्नवा' किस विधा की रचना है?

i. नाटक
ii. उपन्यास
iii. एकांकी
iv. आत्मकथा

व्याख्यात्मक हल –

पुनर्नवा- विधा – उपन्यास
लेखक – हजारीप्रसाद द्विवेदी
अन्य उपन्यास – बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, चारू चंद्रलोक लेख।

ख. कविवचन सुधा के सम्पादक कौन थे?

i. बालकृष्ण भट्ट
ii. प्रतापनारायण मिश्र
iii. बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
iv. बाबू गुलाबराय

व्याख्यात्मक हल –

भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा संपादित पत्रिका। कविवचनसुधा है।
बाला बोधिनी, हरिश्चंद्र चंद्रिका / हरिश्चंद्र मैग्जीन जैसी पत्रिकाओं का भी संपादन किया।

ग. 'आकाश के तारे' कृति किसकी है?

i. दीनदयाल उपाध्याय
ii. कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
iii. भगवतीचरण वर्मा
iv. हजारीप्रसाद द्विवेदी

व्याख्यात्मक हल –

माटी हो गयी सोना, महके आंगन चहके द्वार, भूले बिसरे चेहरे, धरती के फूल, क्षण बोले कण मुस्काए, जिन्दगी मुस्करायी, दीप जले शंख बजे आदि रचनाएँ भी प्रभाकर जी कि हैं।

घ. पैरों में पंख बांधकर रचना की विधा क्या है?

i. नाटक
ii. कहानी
iii. उपन्यास
iv. यात्रावृत्तांत

व्याख्यात्मक हल –

- पैरों में पंख बांधकर, उड़ते चले - रामवृक्ष बेनीपुरी की यात्रा वृत्तांत विधा की रचना है।
- एक बूँद सहसा उछली। अज्ञेय का यात्राव्रत है।

ङ. 'तपती पगडंडियों पर पदयात्रा' रचना [आत्मकथा] किसकी है?

i. डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की
ii. कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर की
iii. दीनदयाल उपाध्याय की
iv. जैनेंद्र कुमार की

व्याख्यात्मक हल –

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर की है ।

- अग्नि की उड़ान एपीजे अब्दुल कलाम की आत्मकथा है। अंग्रेजी में- विंग्स ऑफ फायर एन ऑटोबायोग्राफी कहते हैं।

2- क. हरिऔध जी ने पारिजात काव्य प्रस्तुत किया -

i. सत्रह सर्गों में
ii. पंद्रह सर्गों में
iii. अट्ठारह सर्गों में
iv. बारह सर्गों में

व्याख्यात्मक हल –

पारिजात में पंद्रह सर्ग हैं।
कामायनी में – 15 सर्ग हैं (जयशंकर प्रसाद)
साकेत में – 12 सर्ग हैं (मैथिलीशरण गुप्त)
प्रियप्रवास में – 17 सर्ग हैं (हरिऔध)
भारत-भारती (मैथिलीशरण गुप्त) में - *ग्रन्थ तीन भागों में बाँटा गया है - अतीत खण्ड, वर्तमान खण्ड तथा भविष्यत् खण्ड।*

ख. 'संसद से सड़क तक' किसकी रचना है?

i. सुदामा पांडेय धूमिल
ii. भगवतीचरण वर्मा
iii. त्रिलोचन
iv. नागार्जुन?

व्याख्यात्मक हल –

संसद से सड़क तक, मोचीराम' कल सुनना मुझे, रोटी और संसद आदि काव्य कृतियां सुदामा पांडेय धूमिल जी की है।

ग. वह सप्तक जिसमें कोई भी महिला कवयित्री नहीं है-

i. दूसरा सप्तक।
ii. चौथा सप्तक।
iii. तार सप्तक।
iv. तीसरा सप्तक।

व्याख्यात्मक हल –

- 1943 में प्रकाशित तारसप्तक में कोई महिला कवयित्री नहीं है। अज्ञेय जी केवल तार सप्तक में ही संकलित है।
- तार सप्तक – 1943 ई. संपादक –अज्ञेय
- दूसरा सप्तक –1951 ई.
- तीसरा सप्तक – 1959 ई.
- चौथा सप्तक – 1979 ई.

घ. 'लोकायतन' कृति के रचनाकार हैं-

i. निराला
ii. पन्त
iii. प्रसाद
iv. अज्ञेय

व्याख्यात्मक हल –

- लोकायतन- सुमित्रानंदन पंत की वह रचना है जिस पर- सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार मिला था।
- चिदंबरा- पर ज्ञानपीठ पुरस्कार
- कला और बूढ़ा चाँद पर - साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।
    - अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, राम की शक्तिपूजा, सरोज स्मृति [शोक गीत] आदि रचनाएं- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की है।

ङ. छायावादोत्तर काल का समय माना जाता है-

i. सन 138 से सन् 1953 तक।
ii. सन् 1953 से आज तक।
iii. सन् 1918 से 1953 तक।
iv. सन् 1925 से 1953 तक।

व्याख्यात्मक हल –

- भारतेंदु युग - (पुनर्जागरण काल) -1850- 1900 ई
- द्विवेदी युग - (जागरण सुधार काल)- 1900-1920 ई
- छायावाद युग - 1919-1938 ई
- प्रगतिवाद युग - 1938- 1943 ई
- प्रयोगवाद युग - 1943-1951 ई
- नयी कविता युग - 1951-1559 ई
- साठोत्तरी कविता - 1960- आगे

3. निम्नलिखित गद्यांशो में से किसी एक के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिये- 5x2 = 10

प्रश्नोत्तर नं० – 3

भूमि का निर्माण देवों ने किया है, वह अनंत काल से है। उसके भौतिक रूप, सौन्दर्य और समृद्धि के प्रति सचेत होना हमारा आवश्यक कर्तव्य है। भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति हम जितने अधिक जागरूक होंगे, उतनी ही हमारी राष्ट्रीयता बलवती हो सकेगी। यह पृथिवी सच्चे अर्थों में समस्त राष्ट्रीय विचारधाराओं की जननी है। जो राष्ट्रीयता पृथिवी के साथ नहीं जुड़ी वह निर्मूल होती है। राष्ट्रीयता की जड़ें पृथिवी में जितनी गहरी होंगी, उतना ही राष्ट्रीय भावों का अंकुर पल्लवित होगा। इसलिए पृथिवी के भौतिक स्वरूप की आद्योपांत जानकारी प्राप्त करना, उसकी सुन्दरता, उपयोगिता और महिमा को पहचानना आवश्यक धर्म है।

गद्यांश का भाव - इन पंक्तियों में लेखक ने राष्ट्रीयता के विकास हेतु राष्ट्र के महत्त्वपूर्ण तत्त्व 'भूमि' के रूप, उपयोगिता एवं महिमा के प्रति सचेत रहने तथा भूमि को समृद्ध बनाने पर बल दिया है।

(i) गद्यांश के पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए। अथवा उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश सुविदित साहित्यकार डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा लिखित 'राष्ट्र का स्वरूप' नामक निबन्ध से उद्धृत है। यह निबन्ध हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के गद्य भाग में संकलित है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

रेखांकित अंश की व्याख्या- जो राष्ट्रीय विचारधारा पृथ्वी से सम्बद्ध नहीं होती, वह आधारविहीन होती है और उसका अस्तित्व अल्प समय में ही समाप्त हो जाता है। वस्तुतः हम पृथ्वी के गौरवपूर्ण अस्तित्व के प्रति जितना अधिक सचेत रहते हैं, उतनी ही अधिक राष्ट्रीयता के बलवती होने की सम्भावना रहती है। राष्ट्रीयता का आधार जितना मजबूत होगा, राष्ट्रीय भावनाएँ भी उतनी ही अधिक विकसित होंगी। अतः प्रारम्भ से अन्त तक पृथ्वी के भौतिक स्वरूप की जानकारी रखना तथा उसके रूप, सौन्दर्य, उपयोगिता एवं महिमा को पहचानना प्रत्येक मनुष्य का न केवल परम कर्त्तव्य है, अपितु उसका धर्म भी है ।

(iii) "राष्ट्रीयता की जड़ें पृथिवी में जितनी गहरी होंगी, उतना ही राष्ट्रीय भावों का अंकुर पल्लवित होगा।" इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- "राष्ट्रीयता की जड़ें पृथिवी में जितनी गहरी होंगी, उतना ही राष्ट्रीय भावों का अंकुर पल्लवित होगा।" इस पंक्ति का आशय यह है कि हम पृथ्वी के गौरवपूर्ण अस्तित्व के प्रति जितना अधिक सचेत रहेंगे, उतनी ही अधिक राष्ट्रीयता के बलवती होने की सम्भावना होगी। अन्य शब्दों में राष्ट्रीयता का आधार जितना सशक्त होगा, राष्ट्रीय भावनाएँ भी उतनी ही अधिक विकसित होंगी।

(iv) देवताओं द्वारा निर्मित भूमि के प्रति मानव-जाति का क्या कर्त्तव्य है?
उत्तर- देवताओं द्वारा निर्मित भूमि के प्रति मानव जाति का यह कर्त्तव्य है कि वह इस भूमि के सौन्दर्य के प्रति सचेत रहे और इसका रूप किसी भी दशा में विकृत न होने दे। साथ ही प्रत्येक मनुष्य का यह भी कर्तव्य है कि वह भूमि को विभिन्न प्रकार से समृद्ध बनाने की दशा में सचेष्ट रहे।

(v) पृथ्वी के प्रति हमारा क्या धर्म है?
उत्तर- पृथ्वी के प्रति हमारा यह धर्म है कि हम प्रारम्भ से अन्त तक पृथ्वी के भौतिक स्वरूप की जानकारी रखें तथा उसके रूप, सौन्दर्य, उपयोगिता एवं महिमा को भली-भाँति पहचानें।

(vi) राष्ट्र भूमि के प्रति हमारा आवश्यक कर्त्तव्य क्या है?
उत्तर- राष्ट्र भूमि के भौतिक रूप, सौन्दर्य और समृद्धि के प्रति सचेत होना हमारा आवश्यक कर्तव्य है।

(vii) किस प्रकार की राष्ट्रीयता को लेखक ने निर्मूल कहा है?
उत्तर- जो राष्ट्रीयता पृथिवी के साथ नहीं जुड़ी हो, उसे लेखक ने निर्मूल कहा है।

(viii) यह पृथिवी सच्चे अर्थों में क्या है?
उत्तर- यह पृथिवी सच्चे अर्थों में समस्त राष्ट्रीय विचारधाराओं की जननी है ।

(ix) भूमि का निर्माण किसने किया है, और कब से है?
उत्तर- भूमि का निर्माण देवों ने किया है और यह अनन्तकाल से है।
(x) भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति जागरूक रहने का परिणाम क्या होगा?
उत्तर- भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति जागरूक रहने का परिणाम यह होगा कि इससे हमारी राष्ट्रीयता बलवती होगी।
(xi) लेखक पृथ्वी को सच्चे अर्थों में क्या मानता है ?
उत्तर- लेखक पृथ्वी को सच्चे अर्थों में समस्त राष्ट्रीय विचारधाराओं की जननी मानता है।
(xii) पार्थिव व आद्योपांत शब्दों के अर्थ लिखिए।
उत्तर- पार्थिव - पृथ्वी संबंधी, पृथ्वी से उत्पन्न।
आद्योपांत- शुरू से अंत तक, आद्यंत।
(xiii) हमारी राष्ट्रीयता कैसे बलवती होगी?
उत्तर - भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति हम जितने अधिक जागरूक होंगे, उतनी ही हमारी राष्ट्रीयता बलवती हो सकेगी।

अथवा

यदि यह नवीनीकरण सिर्फ कुछ पंडितों की व आचार्यों की दिमागी कसरत ही बनी रहे तो भाषा गतिशील नहीं होती। भाषा का सीधा सम्बन्ध प्रयोग से है और जनता से है। यदि नए शब्द अपने उद्‌गम-स्थान में ही अड़े रहें और कहीं भी उनका प्रयोग किया नहीं जाए तो उसके पीछे के उद्‌देश्य पर ही कुठाराघात होगा। इसके लिये यूरोपीय देशों में प्रेषण के कई माध्यम है; श्रव्य दृश्य विधान, वैज्ञानिक कथा साहित्य आदि। हमारी भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक कथा साहित्य प्रायः नहीं के बराबर है। किसी भी नये विधान की सफलता जनता की सम्मति व असम्मति के आधार पर निर्भर करती है, और जनता में इस चेतना को उजागर करने का उत्तरदायित्व शिक्षित समुदाय एवं सरकार का होना चाहिए।

(i) भाषा का सीधा सम्बन्ध किससे है?
उत्तर- भाषा का सीधा सम्बन्ध प्रयोग एवं जनता से है।
(ii) नए शब्दों के प्रयोग न किए जाने पर क्या परिणाम होगा?
उत्तर- नए शब्दों के प्रयोग न किए जाने पर उसके पीछे के उद्देश्य पर कुठाराघात होगा।
(iii) गद्यांश में प्रयुक्त भाषा-शैली बताइए।
उत्तर- भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। शैली विवेचनात्मक है।
(iv) 'कुठाराघात' का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- कुठाराघात शब्द से आशय है कि भाषा जिस दिन स्थिर हो गई, उसी दिन से उसमें क्षय आरम्भ हो जायेगा।

(v) यूरोपीय देशों में शब्द प्रेषण के माध्यम कौन-कौन से हैं?

उत्तर- यूरोपीय देशों में शब्द प्रेषण के माध्यम हैं श्रव्य-दृश्य विधान, वैज्ञानिक कथा साहित्य आदि।

(vi) लेखक के अनुसार नए शब्दों का प्रयोग न किए जाने पर क्या परिणाम होगा?

उत्तर- लेखक के अनुसार यदि नये शब्द अपने उद्‌गम स्थान पर ही अड़े रहें और कहीं भी उनका प्रयोग किया न किया जाये तो उसके पीछे के उद्‌देश्य पर ही कुठाराघात होगा।

(vii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- जो भाषा जितनी अधिक जनता दवारा स्वीकार एवं परिवर्तित की जाती है, वह उतनी ही अधिक जीवन्त एवं चिरस्थायी होती है। भाषा गतिशील होती है, वह अभिव्यक्ति का एक माध्यम है जिससे लोगों के बीच संवाद स्थापित होता है। उसका सीधा संबंध लोगों में प्रयोग करने से है और जनता के बीच बातचीत करने से है।

(viii) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर- शीर्षक- भाषा और आधुनिकता, लेखक- प्रो0 जी0 सुन्दर रेड्डी।

4. पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 5x2 = 10

लज्जाशीला पथिक महिला जो कहीं दृष्टि आये।
होने देना विकृत-वसना तो न तू सुन्दरी को।।
जो थोड़ी भी श्रमित वह हो गोद ले श्रान्ति खोना।
होंठों की औ कमल-मुख की म्लानतायें मिटाना।।
कोई क्लान्ता कृषक-ललना खेत में जो दिखावे।
धीरे-धीरे परस उसकी क्लान्तियों को मिटाना।।
जाता कोई जलद यदि हो व्योम में तो उसे ला।
छाया द्वारा सुखित करना, तप्त भूतांगना को।।

प्रश्नोत्तर नं० – 4

(i) दिये गये पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।

उत्तर- कवि का नाम – अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध

कविता का नाम – पवन दूतिका (प्रियप्रवास से उद्धृत)

(ii) राधा पवन दूतिका से राह में पथिकों के साथ कैसा व्यवहार करने को कहती है?

उत्तर- राधा पवन-दूतिका से कह रही है कि यदि मार्ग में कोई लज्जाशील स्त्री दिखाई दे तो उसके वस्त्रों को मत उड़ाना, थकी हुई प्रतीत हो तो उसकी थकावट को दूर कर देना।

(iii) इस पद्यांश में कवि ने किसका चित्रण किया है?

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने एक ओर राधा की विरह व्यथा का चित्रण किया है तो दूसरी ओर उन्हें समाज की पीड़ा से भी व्याकुल दिखाया है।

(iv) इस पद्यांश में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश में मानवीकरण, उपमा, अनुप्रास व रूपक अलंकार है।

(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- राधा पवन को समझाती है कि तुझे मार्ग में ब्रजभूमि की अत्यन्त लज्जाशील महिलाएँ दिखाई देंगी। अतः तुझे उनका मान-सम्मान करते हुए ही आगे बढ़ना है तू कहीं अपनी चंचलता का प्रदर्शन करते हुए उनके वस्त्रों को उड़ाकर उनके कोमलांगों को अनावृत मत कर देना।

(vi) राधा पवन को लज्जाशील स्त्री के सम्बन्ध में क्या समझाती है?

उत्तर- राधा पवन को लज्जाशील स्त्री के सम्बन्ध में यह समझाती है कि तुझे मार्ग में कोई लाजवंती स्त्री दिखाई दे तो उसके वस्त्र मत देना।

(vii) राधा के अनुसार पवन थकी हुई स्त्री की थकावट कैसे दूर करेगी?

उत्तर- राधा पवन से कहती है कि यदि कोई थकी हुई स्त्री दिखाई दे तो उसके निकट जाकर उसकी थकावट को स्पर्श करके दूर करना।

(viii) कमल-मुख में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर- रूपक अलंकार।

(ix) राधा पवन को क्लांत व्यक्ति के सम्बन्ध में क्या बताती है?

उत्तर- राधा पवन को क्लांत व्यक्ति के सम्बन्ध में यह बताती है कि यदि रास्ते में कोई थका हुआ व्यक्ति दिखाई दे तो उसकी थकावट को दूर करना।

(x) व्योम तथा भूतांगना का क्या अर्थ है?

उत्तर- व्योम- आकाश

भूतांगना- गर्मी से तप्त किसान की स्त्री।

(xi) राधा पवन से कृषक-स्त्री की क्या सहायता करने को कहती है?

उत्तर- राधा पवन से कृषक स्त्री की थकावट दूर करने को और आकाश में बदल लाकर उसकी छाया प्रदान कर प्रसन्न करने को कहती है।

(xii) प्रतुत पंक्तियों में राधा को किस रूप में चित्रित किया गया है?

उत्तर- प्रतुत पंक्तियों में राधा को लोक कल्याणकारी रूप में चित्रित किया गया है।

अथवा

'यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को।
'चौंके सब सुनकर अटल केकयी- स्वर को।
सबने रानी की ओर अचानक देखा,
वैधव्य तुषारावृता यथा विधु- लेखा।
बैठी थी अचल तथापि असंख्यतरंगा,
वह सिंही अब थी हहा ! गोमुखी गंगा
" हाँ, जनकर भी मैंने न भरत को जाना,
सब सुन लें, तुमने स्वयं अभी यह माना।
यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया ,
अपराधिन मैं हूँ तात, तुम्हारी मैया।।

(i) प्रस्तुत पद्यांश के कवि व शीर्षक का नाम लिखिए।
उ०-कविता - 'कैकेयी का अनुताप'
रचनाकार - राष्ट्रकवि 'मैथिलीशरण गुप्त'
(ii) पद्यांश का प्रसंग क्या है?
उ०- श्रीराम ने कैकेयी को सम्बोधित करते हुए कहा था कि भरत की जननी होते हुए भी वे उन्हें समझ नहीं पाई। उसी बात को लक्ष्य कर कैकेयी राम से कहती हैं ।
(iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
उ०- उस समय विधवा के वेश में वह सफेद वस्त्र धारण किए ऐसी प्रतीत हो रही थी, मानो कुहरे से ढकी चाँदनी हो। यद्यपि कैकेयी निश्छल और स्थिर बैठी हुई थी, तथापि उसके हृदय में अनेक प्रकार के भावों की लहरें उठ रही थीं। सिंहनी जैसा रूप धारण करनेवाली वह कैकेयी अब गोमुखी गंगा के समान शान्त, शीतल और पवित्र हो उठी थी ; अर्थात् उसके मुख से गंगाजल के समान कल्याणकारी और मधुर शब्द निकल रहे थे। कैकेयी ने राम से कहा कि यह सत्य है कि भरत को जन्म देकर भी मैं उसे न पहचान सकी। सभी व्यक्ति मेरी इस बात को सुन लें। राम ने भी अभी इसी बात को स्वीकार किया है।

(iv) राम की उस रात्रिकालीन सभा में सभी क्या सुनकर चौंक पड़े?
उ०- राम की उस रात्रिकालीन सभा में सभी कैकेयी के इस दृढ़ स्वर को सुनकर चौंक पड़े कि हे राम ! यदि तुम्हारी बात सत्य है कि मैं माँ होते भी भरत की बात न समझ पाई तो अब तुम घर को लौट चलो ; अर्थात् अपनी नासमझी में मैंने जो तुम्हारे वनवास की कामना की थी, मेरी उस भूल को तुम भुला दो।
(v) एक विधवा के वेश में कैकेयी उस समय कैसी प्रतीत हो रही थी?
उ०- एक विधवा के वेश में कैकेयी उस समय सफेद वस्त्र धारण किए हुए ऐसी प्रतीत हो रही थी, मानो कुहरे से ढकी चाँदनी हो।
(vi) सिंहनी जैसा रूप धारण करनेवाली कैकेयी इस समय किस रूप में दिखाई दे रही थी?
उ०- सिंहनी जैसा रूप धारण करनेवाली कैकेयी इस समय गोमुख गंगा के समान शान्त, शीतल और पवित्र रूप में दिखाई दे रही थी।

(vii) प्रस्तुत पद्यांश में किन - किन पात्रों के बीच संवाद हो रहा है?

उ०- प्रस्तुत पद्यांश में कैकेयी और राम के बीच संवाद हो रहा है।

(vii) घर लौट चलने के लिए कौन किससे आग्रह कर रहा है?

उ०- घर लौट चलने के लिए कैकेयी राम से आग्रह कर रही है।

(viii) सिंहनी और गोमुखी गंगा से क्या अभिप्राय है?

उ०- सिंहनी 'का अभिप्राय यहाँ पर वीरांगना और साहसिनी से है। 'गोमुखी 'से अभिप्राय शान्त और पवित्र वाणीवाली है।

5. (क) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए |

(अधिकतम शब्द - सीमा 80 शब्द) - 3 + 2 = 5

(i) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ii) डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम

(iii) प्रोफेसर जी सुंदर रेड्डी

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द - सीमा 80 शब्द) - 3 + 2 = 5

(i) महादेवी वर्मा

(ii)सुमित्रानंदन पंत

(iii) रामधारी सिंह दिनकर

प्रश्नोत्तर नं० – 5 (क) [साहित्यिक परिचय]

(i) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

संक्षिप्त-परिचय

- जन्म- सन् 1907 ई0।
- जन्म-स्थान- दुबे का छपरा (बलिया)।
- पिता- अनमोल द्विवेदी।
- माता- ज्योतिषमती।
- बचपन का नाम- वैद्यनाथ द्विवेदी।
- सम्मान- पद्मभूषण और मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित।
- प्रमुख रचनाएँ- अशोक के फूल, कुटज, विचार प्रवाह, विचार और वितर्क, आलोक पर्व, कल्पलता, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा।
- मृत्यु- 18 मई, सन् 1979 ई0।

साहित्यिक-परिचयः-

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन 1907 ई0 में बलिया जिले के 'दुबे का छपरा' नामक गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम अनमोल द्विवेदी था। इनकी प्रतिभा का विशेष विकास विष्वविख्यात संस्था शांतिनिकेतन में हुआ। वहां यह 11 वर्ष तक हिंदी भवन के निदेशक के रूप में कार्य करते रहे। सन् 1949 ई0 में लखनऊ विष्वविद्यालय ने इन्हें 'डी0 लिट0' की उपाधि से तथा सन् 1957 ई0 में भारत सरकार ने 'पद्म भूषण' की उपाधि से विभूषित किया।

इन्होंने काशी हिंदू विष्वविद्यालय और पंजाब विष्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया तथा उत्तर प्रदेश सरकार की 'हिंदी ग्रंथ अकादमी' के अध्यक्ष रहे। तत्पश्चात् यह हिंदी 'साहित्य सम्मेलन प्रयाग' के सभापति रहे।

हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य के प्रख्यात निबंधकार, इतिहास लेखक, अन्वेषक, आलोचक, संपादक तथा उपन्यासकार के अतिरिक्त कुशल वक्ता और सफल अध्यापक भी थे। उन्होंने विष्व भारती और अभिनव भारती ग्रंथमाला का संपादन किया। उन्होंने विलुप्तप्राय जैन साहित्य को प्रकाश में लाकर अपनी गहन शोध दृष्टि का परिचय दिया। दिवेदी जी की साहित्यिक सेवा को डी0 लिट0, पद्मभूषण और मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित किया गया है।

रचनाएँः- द्विवेदी जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं-

1.निबंध संग्रह- अशोक के फूल, कुटज, विचार प्रवाह, विचार और वितर्क, आलोक पर्व, कल्पलता।

2.आलोचना साहित्य- सूरदास, कालिदास की लालित्य योजना, कबीर, साहित्य सहचर, साहित्य का मर्म।

3.इतिहास- हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य का आदिकाल, हिंदी साहित्य।

4.उपन्यास- बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा और अनामदास का पोथा।

5.संपादन- नाथ सिद्धों की बानियाँ, संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, संदेश रासक।

प्रश्नोत्तर नं० – 5 (ख) [साहित्यिक परिचय]

(i) महादेवी वर्मा

- **जन्म-** सन् 1907 ई0
- **जन्म स्थान-** फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेष)
- **पिता का नाम-** श्री गोबिन्दसहाय वर्मा
- **माता का नाम-** श्रीमती हेमरानी
- **उपलब्धियाँ-** महिला विद्यापीठ की प्राचार्या, पद्मभूषण पुरस्कार, सेकसरिया तथा मंगलाप्रसाद पुरस्कार, भारत-भारती पुरस्कार तथा भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि।
- **कृतियाँ-** नीहार, रष्मि, नीरजा, सान्ध्य-गीत, दीपषिखा।
- **भाषा-**खड़ी बोली व ब्रज भाषा।
- **षैली-** मुक्तक, चित्र, प्रगीत।
- **मृत्यु-** 11 सितम्बर, 1987 ई0।

जीवन परिचयः-

पीड़ा की अमर गायिका, आधुनिक युग की मीरा महादेवी वर्मा जी का जन्म फर्रूखाबाद के एक शिक्षित कायस्थ परिवार में सन् 1907 ई0 में होलिका दहन के दिन हुआ था। इनके पिता श्री गोविन्दप्रसाद वर्मा, एक कॉलेज में प्रधानाचार्य थे। इनकी माता हेमरानी परम विदुषी धार्मिक महिला थीं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर में और उच्च शिक्षा प्रयाग में हुई। संस्कृत से एम0 ए0 उत्तीर्ण करने के बाद ये प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रधानाचार्या हो गयीं। इनका विवाह 9 वर्ष की अल्पायु में ही हो गया था। इनके पति श्री रूपनारायण सिंह एक डॉक्टर थे, परन्तु इनका दाम्पत्य जीवन सफल नहीं रहा था। महादेवी जी ने घर पर ही चित्रकला तथा संगीत की शिक्षा भी प्राप्त की। कुछ समय तक ये 'चाँद' पत्रिका की सम्पादिका भी रहीं। 11 सितम्बर, 1987 ई0 को इस महान् लेखिका का स्वर्गवास हो गया।

साहित्यक परिचयः-

महादेवी वर्मा जी छायावादी कवियों की वृहत् चतुष्टयी में आती हैं। इनके काव्य में वेदना की प्रधानता है। काव्य के अतिरिक्त इनकी बहुत-सी श्रेष्ठ गद्य-रचनाएँ भी हैं। इन्होने प्रयाग में 'साहित्यकार संसद' की स्थापना करके साहित्यकारों का मार्गदर्शन भी किया।

'चाँद' पत्रिका का सम्पादन किया और नारी को अपनी स्वतन्त्रता और अधिकारों के प्रति सजग किया है। कुछ वर्षो तक ये उत्तर प्रदेश विधान-परिषद् की मनोनीत सदस्या भी रहीं। भारत के राष्ट्रपति से इन्होने 'पद्मभूषण' की उपधि प्राप्त की। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से इन्हें 'सेकसरिया पुरस्कार' तथा 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' मिला। मई, 1983 ई0 में 'भारत-भारती' तथा नवम्बर 1983 ई0 में यामा पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से इन्हें सम्मानित किया गया।

रचनाएँः-

- ✓ नीहार, रश्मि, नीरजा, साध्यगीत,
- ✓ दीपशिखा, यामा, सन्धिनी,
- ✓ आधुनिक कवि,
- ✓ सप्तपर्णा
- ✓ अतीत के चलचित्र
- ✓ स्मृति की रेखाएँ
- ✓ श्रृंखला की कड़ियाँ

आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

6 . ' ध्रुवयात्रा ' या 'पंचलाइट' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए
(अधिकतम शब्द - सीमा 80 शब्द) 5

अथवा

' पंचलाइट या बहादुर ' कहानी की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए ।

प्रश्नोत्तर नं० – 6

'पंचलाइट' कहानी के उद्देश्य

'पंचालाइट' कहानी के लेखक फणीश्वरनाथ 'रेणु' जी हिन्दी-जगत् के सुप्रसिद्ध आंचलिक कथाकार हैं। 'पंचालाइट' भी बिहार के आंचलिक परिवेश की कहानी है। इस कहानी के द्वारा 'रेणु' जी ने ग्रामीण अंचल का वास्तविक चित्र खींचा है। गोधन के द्वारा पेट्रोमैक्स जला देने पर उसकी सभी गलतियाँ माफ कर दी जाती हैं; उस पर लगे सारे प्रतिबन्ध हट जाते हैं तथा उसे मनचाहा आचरण करने की छूट भी मिल जाती है।

इससे स्पष्ट होता है कि आवश्यकता बड़े-से-बड़े रूढ़िगत संस्कार और परम्परा को व्यर्थ साबित कर देती है। इसी केन्द्रीय भाव के आधार पर कहानी के एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है।

इस प्रकार 'पंचलाइट' जलाने की समस्या और उसके समाधान के माध्यम से कहानीकार ने ग्रामीण मनोविज्ञान का सजीव चित्र उपस्थित कर दिया है। ग्रामवासी जाति के आधार पर किस प्रकार टोलियों में विभक्त हो जाते हैं और आपस में ईर्ष्या-द्वेष युक्त भावों से भरे रहते हैं, इसका बड़ा ही सजीव चित्रण इस कहानी में हुआ है। रेणु जी ने यह भी दर्शाया है कि भौतिक विकास के इस आधुनिक युग में भी भरतीय गाँव और कुछ जातियाँ कितने अधिक पिछड़े हुए हैं। कहानी के माध्यम से 'रेणु' जी ने अप्रत्यक्ष रूप से ग्राम- सुधार की प्रेरणा भी दी है।

7 . स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्ड के प्रश्न का उत्तर दीजिए (अधिकतम शब्द - सीमा 80 शब्द) - 5

(i) ' मुक्तियज्ञ ' खण्डकाव्य की कथानक का संक्षिप्त वर्णन कीजिए ।

या मुक्तियज्ञ ' खण्डकाव्य के आधार पर नायक का चरित्र चित्रण कीजिए ।

(ii) ' सत्य की जीत ' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

या ' सत्य की जीत ' खण्डकाव्य के आधार पर द्रोपदी की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए

(i) ' रश्मिरथी ' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए ।

या ' रश्मिरथी ' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण का चरित्र - चित्रण कीजिए ।

(iv) ' आलोकवृत्त ' खण्डकाव्य की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए ।

या ' आलोकवृत्त ' खण्डकाव्य के आधार पर गांधी जी की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

(v) ' त्यागपथी ' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

या ' त्यागपथी ' खण्डकाव्य के आधार पर सम्राट हर्षवर्धन का चरित्र चित्रण कीजिए ।

(vi) ' श्रवणकुमार ' खण्डकाव्य के अयोध्या सर्ग की कथावस्तु लिखिए कीजिए ।

या ' श्रवणकुमार ' खण्डकाव्य के आधार पर श्रवण कुमार का चरित्र चित्रण कीजिए ।

प्रश्नोत्तर नं० – 7

(i) मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक (गांधी जी) का चरित्र चित्रण

मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर गाँधी जी की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

सत्य व अहिंसा के पुजारी- गाँधी जी विषम से विषम परिस्थितियों में सत्य तथा अहिंसा रूपी अस्त्रों का त्याग नहीं करते। अपने इन्हीं अस्त्रों के बल पर उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की चूलें हिला दी तथा भारत की जनता को पराधीनता के बन्धनों से मुक्त कराया।

दृढ़ प्रतिज्ञ- गाँधी ने एक बार जो प्रण किया, उसका अक्षरशः पालन किया। ब्रिटिश शासन के दमन चक्र की परवाह किये बिना उन्होंने अनेक सफल सत्याग्रह संचालित किये और भारत माता को बांधी गयी पराधीनता की बेड़ियों को काट डाला।

मानवता के प्रबल समर्थक- गाँधी के दृष्टिकोण में प्रत्येक मानव में ईश्वर का अंश विद्यमान है। उन्होंने अपना समस्त जीवन मानवता के कल्याण में ही लगा दिया।

निर्भीक तथा साम्प्रदायिक विद्वेष के विरोधी- गाँधी निर्भीकता के साथ ब्रिटिश सरकार के दमन चक्र के समक्ष अटल रहे तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त भी नोआखली के साम्प्रदायिक दंगों को रोकने के प्रयासों में लगे रहे।

लोकनायक - गाँधी सच्चे अर्थों में जनता के नेता थे। वे जनता को उपदेश नहीं देते थे बल्कि अपने स्व- आचरण द्वारा उन्हें कर्मों का ज्ञान दिया करते थे। गाँधी का भारतीय जनमानस पर कुछ ऐसा प्रभाव था कि उनका एक वाक्य भी जनता के लिए कर्मयोग का आदेश था तथा लाखों व्यक्तियों का जनसमूह उनके कदमों के पीछे था।

'खण्ड ख'

8.(क) निम्नलिखित संस्कृत - पद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए - 2 + 5 =7

संस्कृताङ्ग्लभाषासु अस्य समानः अधिकारः आसीत् । हिन्दीहिन्दुहिन्दुस्थानानामुत्थानाय अयं निरन्तरं प्रयत्नमकरोत् । शिक्षयैव देशे समाजे च नवीनः प्रकाशः उदेति अतः श्रीमालवीयः वाराणस्यां काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य संस्थापनमकरोत् । अस्य निर्माणाय अयं जनान् धनम् अयाचत जनाश्च महत्यस्मिन् ज्ञानयज्ञे प्रभूतं धनमस्मै प्रायच्छन् , तेन निर्मितोऽयं विशालः विश्वविद्यालयः भारतीयानां दानशीलतायाः श्रीमालवीयस्य यशसः च प्रतिमूर्तिरिव विभाति ।

सन्दर्भ- गद्यखण्ड हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'महामना मालवीयः' नामक पाठ से उद्धृत है।

हिंदी अनुवाद - इनका हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं पर समान अधिकार था। हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान की उन्नति के लिए ये निरन्तर प्रयत्न करते रहे। शिक्षा द्वारा ही देश और समाज में नवीन प्रकाश का उदय होता है, इसलिए श्री मालवीय ने वाराणसी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। इसके निर्माण के लिए इन्होंने लोगों से धन माँगा और लोगों ने इस महान् ज्ञानयज्ञ में इन्हें प्रचुर धन दिया। इनके द्वारा बनवाया हुआ यह विशाल विश्वविद्यालय भारतीयों की दानशीलता और श्री मालवीय के यश की प्रतिमूर्ति की भाँति सुशोभित हो रहा है।

अथवा

पञ्चशीलमिति शिष्टाचारविषयकाः सिद्धान्ताः । महात्मा गौतमबुद्धः एतान् पञ्चापि सिद्धान्तान् पञ्चशीलमिति नाम्ना स्वशिष्यान् शास्ति स्म । रत एवायं शब्दः अधुनापि तथैव स्वीकृतः । इमे सिद्धान्ताः क्रमेण एवं सन्ति – (1) अहिंसा , (2) सत्यम् , (3) अस्तेयम् , (4) अप्रमादः , (5) ब्रह्मचर्यम् इति ।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'पञ्चशील-सिद्धान्ताः' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद :- पंचशील शिष्टाचार से सम्बन्धित सिद्धान्त है। महात्मा गौतम बुद्ध पंचशील नामक इन पाँचों सिद्धान्तों का अपने शिष्यों को उपदेश देते थे, इसलिए यह शब्द आज भी उसी रूप में स्वीकारा गया है। ये सिद्धान्त क्रमशः इस प्रकार हैं-

(1) अहिंसा, (2) सत्य, (3) चोरी न करना, (4) प्रमाद न करना, (5) ब्रह्मचर्य

(ख) निम्नलिखित संस्कृत - पद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए- 2 + 5 = 7

न चौरहार्यं न च राजहार्यं
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्द्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ।।

प्रश्नोत्तर नं० – 8 (ख)

सन्दर्भ- प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'सुभाषितरत्नानि' नामक पाठ' से उदधृत है।

हिन्दी अनुवाद- इसे न तो चोर चुरा सकता है, न राजा छीन सकता है, न भाई बाँट सकता है और न तो यह बोझ ही बनता है। विद्यारूपी धन सभी धनों में प्रधान है। यहाँ कहने का तात्पर्य है कि अन्य सम्पदाओं की भाँति विद्यारूपी धन घटने वाला नहीं है। यह धन खर्च किए जाने पर और भी बढ़ता जाता है।

अथवा

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।
वर्जयेतादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ।।

सन्दर्भ- प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'संस्कृत दिग्दर्शिका' के 'सुभाषितरत्नानि' नामक पाठ' से उदधृत है।

पीछे कार्य को नष्ट करने वाले तथा सम्मुख प्रिय (मीठा) बोलने वाअनुवाद - ले मित्र का उसी प्रकार त्याग कर देना चाहिए, जिस प्रकार मुख पर दूध लगे विष से भरे घड़े को छोड़ दिया जाता है।

9. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों में से किसी एक का अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए- 1+1=2

(i) कोयले की दलाली में हाथ काले
(ii) दांत खट्टे करना
(iii) दाल में कुछ काला होना
(iv) आप भले तो जग भला

प्रश्नोत्तर नं० – 9

(i) कोयले की दलाली में हाथ काले
अर्थ- बुरी संगत का बुरा प्रभाव पड़ता है।
वाक्य प्रयोग – विकास अच्छा लड़का था, लेकिन जब से वह गली के आवारा लड़कों के साथ रहने लगा, तब से सभी विकास को भी आवारा समझने लगे, यह सच ही है कि कोयले की दलाली में हाथ काले हो ही जाते है।

10. अपठित गद्यांशो पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिये – 5

वर्तमानकाल विज्ञापन का युग माना जाता है। समाचार-पत्रों के अतिरिक्त रेडियो और टेलीविजन भी विज्ञापन के सफ़ल साधन हैं। विज्ञापन का मूल उद्देश्य उत्पादक और उपभोक्ता में सीधाा संपर्क करना होता है। जितना अधिक विज्ञापन किसी पदार्थ का होगा, उतनी ही उसकी लोकप्रियता बढ़ेगी। इन विज्ञापनों पर धन तो अधिाक व्यय होता है, पर इनसे बिक्री बढ़ जाती है। ग्राहक जब इन आकर्षक विज्ञापनों को देखता है, तो वह उस वस्तु विशेष के प्रति आकृष्ट होकर उसे खरीदने को बाध्य हो जाता है।

प्रश्न

(i) वर्तमान युग में विज्ञापन के कौन-कौन से तीन साधन हैं?

(ii) विज्ञापनों का मूल उद्देश्य क्या होता है?

(iii) उत्पादक विज्ञापनों पर धन-व्यय क्यों करता है?

प्रश्नोत्तर नं० – 10

(i) वर्तमान युग में समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन विज्ञापन के तीन प्रमुख साधन हैं।

(ii) विज्ञापन का उद्देश्य होता है- उत्पादन करने वालों तथा उत्पादित वस्तुओं का प्रयोग करने वालों में सीधा संपर्क स्थापित करना।

(iii) उत्पादक विज्ञापनों पर धन इसलिए व्यय करता है, क्योंकि इससे उनकी वस्तुओं

11.(क) निम्नलिखित शब्दों का सही अर्थ चयन करके लिखिए-

(i) अग- अघ :-

(A) आगे और पीछे
(B) नया और पुराना
(C) आगे और पाप
(D) संपूर्ण और पुण्य

उत्तर-

- अग – आगे
- अघ- पाप
- अनघ- पुण्य
- अज– अजन्मा
- द्विज – दो बार जन्म लेने वाला/ब्राह्मण/पक्षी

(ii) सुगंध - सौगंध :-

(A) सुआस और दुर्गंध

(B) महक और शपथ

(C) अंधा तोता और सैकड़ों खुशबू

(D) तोता और तोते का बच्चा

व्याख्यात्मक हल –

✓ सुगंध- महक/खुशबू

✓ सौगंध- शपथ/कसम

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए
(i) घनश्याम (ii) चपला (iii) वर

व्याख्यात्मक हल –

(i) घनश्याम - बादल, कृष्ण
(ii) चपला – विद्युत, लक्ष्मी
(iii) वर – श्रेष्ठ, दूल्हा
(iv) पयोधर- समुद्र, बादल

(ग) निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द का चयन करके लिखिए

(i) अपने आप को धोखा देने वाला-

(A) आत्मवंचक
(B) अज्ञानी
(C) एकाग्रचित्त
(D) अकिंचन

(ii) जो एकदम नई चीज बनाएं-

(A) आस्तिक
(B) अविष्कारक
(C) आरोहण
(D) आलोचक

प्रश्नोत्तर नं० – 11 (ग)

(i) -(A) आत्मवंचक

(ii) -(B) आविष्कारक

(घ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए

(i) मैं कलम के साथ लिखता हूं।
(ii) तुम बच्चों को कहानी सुनाया कर।
(iii) प्रज्ञा गुणवान स्त्री है।
(iv) हिमालय पर्वत सबसे ऊंचा पर्वत है।

व्याख्यात्मक हल –

अशुद्ध - (i) मैं कलम के साथ लिखता हूं।
शुद्ध- मैं कलम से लिखता हूँ।
अशुद्ध - (ii) तुम बच्चों को कहानी सुनाया कर।
शुद्ध- तुम बच्चों को कहानियाँ सुनाया करो।
अशुद्ध - (iii) प्रज्ञा गुणवान स्त्री है।
शुद्ध- प्रज्ञा गुणवती स्त्री है।
अशुद्ध - (iv) हिमालय पर्वत सबसे ऊंचा पर्वत है।
शुद्ध- हिमालय सबसे ऊंचा पर्वत है।

12. (क) ' करुण ' रस अथवा ' हास्य ' रस के स्थायी भाव के साथ उसकी परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए । 1 + 1 = 2

(ख) ' रूपक' अलंकार अथवा ' श्लेष' अलंकार का लक्षण उदाहरण सहित लिखिए । 1 + 1 = 2

(ग) ' चौपाई ' अथवा 'कुंडलिया ' छन्द का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए । 1 + 1 = 2

प्रश्नोत्तर नं० - 12 (क)

करुण रस

परिभाषा – करुण रस का स्थायी भाव शोक है। शोक नामक स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी विभाव के संयोग से रस रूप में परिणत होता है तो उसे करुण रस कहते हैं।

उदहारण –

जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फ़न करिबर कर हीना॥
अस मम जिवन बन्धु बिन तोही। जौ जड़ दैव जियावै मोही॥

प्रश्नोत्तर नं० - 12 (ख)

रूपक अलंकार

लक्षण– जहां उपमेय में उपमान का आरोप किया जाए वहाँ रूपक अलंकार होता है|

उदहारण –

बीती विभावरी जाग री,
अम्बर-पनघट में डुबो रही तारा-घट उषा-नागरी।

प्रश्नोत्तर नं० - 12 (ख)

कुण्डलिया छंद

लक्षण– कुंडलियां छंद एक विषम मात्रिक छंद है । जिसमें 6 चरण होते हैं ।प्रत्यक चरण में 24-24 मात्राएँ होती हैं। यह छंद दोहा और रोला दो छंदों के मेल से बनता है। कुंडिलयां में पहले दोहा फिर रोला आता है। प्रारंभ के दो चरण दोहे तथा अंत के चार चरण सोरठा के होते हैं। दोहे का अंतिम चरण रोला का प्रथम चरण बनता है। यह जिस शब्द से प्रारंभ होता है उसी से अंत होता है।

उदहारण –

साईं, बैर न कीजिए, गुरु, पंडित, कवि, यार ।
बेटा, बनिता, पँवरिया, यज्ञ–करावनहार ॥
यज्ञ–करावनहार, राजमंत्री जो होई ।
विप्र, पड़ोसी, वैद्य, आपकी तपै रसोई ॥
कह गिरिधर कविराय, जुगन ते यह चलि आई,
इन तेरह सों तरह दिये बनि आवे साईं ॥

13. इलाहाबाद बैंक के शाखा प्रबंधक को शिक्षित बेरोजगार ऋण योजना के अंतर्गत ऋण प्राप्ति हेतु एक आवेदन पत्र लिखिए

अथवा

किसी विद्यालय के प्रधानाचार्य/ प्रबंधक को प्रवक्ता पद पर अपनी नियुक्ति हेतु एक आवेदन पत्र लिखें

प्रश्नोत्तर नं० – 13 (पत्र लेखन)

सेवा में

श्रीमान शाखा प्रबंधक

इलाहबाद बैंक

शाखा- सदरपुर (सीतापुर)

विषय : – शिक्षित बेरोजगार ऋण योजना के अंतर्गत ऋण प्राप्ति हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपकी बैंक शाखा में बचत खाताधारक हूँ। पिछले दिनों माननीय प्रधानमन्त्री महोदय ने प्रधानमन्त्री रोजगार योजना का शुभारम्भ किया था, जिसमें शिक्षित बेरोजगारों को एक लाख रुपए का ऋण देने का प्रावधान है। मैं भी बी० ए० पास एक शिक्षित बेरोजगार युवक हूँ और इस योजना का लाभ उठाकर एक लाख रुपए का ऋण लेकर इससे बॉल पेन बनाने का लघु उद्योग आरम्भ करना चाहता हूँ। इस हेतु आपकी सेवा में अपने विवरणसहित अपनी भावी योजना का संक्षिप्त प्रारूप प्रस्तुत कर रहा हूँ, ।

श्रीमान जी से मेरा नम्र निवेदन है कि मेरे इस ऋण आवेदन-पत्र को स्वीकृत करके मुझे ऋण प्रदान कर कृतार्थ करें।

सधन्यवाद!

भवदीय

ए.बी.ए.

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा - शैली में निबन्ध लिखिए - 2 + 7 = 9

(i) जनसंख्या: समस्या और समाधान

(ii) मेरा प्रिय साहित्यकार: जयशंकर प्रसाद

(iii) भारत में बेरोजगारी की समस्या

(iv) मानव जीवन में वनों की उपयोगिता

(v) स्वच्छता अभियान की सामाजिक सार्थकता

प्रश्नोत्तर नं० – 14 (निबन्ध लेखन)

जनसंख्या: समस्या और समाधान

- रूपरेखा
- प्रस्तावना
- भारत में जनसंख्या-वृद्धि के कारण
- जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करने के उपाय
- उपसंहार

प्रस्तावना – जनसंख्या वृद्धि किसी भी क्षेत्र में लोगों की संख्या बढने को कहा जाता है। विभिन्न प्रकार के सर्वे से पता चला है कि प्रारम्भ से 1830 ई० तक विश्व की कुल जनसंख्या केवल एक अरब थी, किन्तु अगले 100 वर्षों में ही अर्थात् 1930 ई० तक जनसंख्या दुगुनी हो गयी। तात्पर्य यह है कि जितनी जनसंख्या वृद्धि लाखों वर्षों में हुई उतनी वृद्धि इधर मात्र 100 वर्षों में ही हो गयी। जनसंख्या वृद्धि की यह गति और द्रुत हुई और अगली एक अरब की वृद्धि केवल 30 वर्षों में ही हो गयी। भारत जनसंख्या वृद्धि की इस प्रतियोगिता में काफी तेज है। जनसंख्या के आकार के साथ देश की अर्थव्यवस्था प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होती है। भारत जैसे विशाल जनसंख्यावाले देश में जहाँ जनसंख्या के आकार में निरन्तर एवं तीव्र गति से वृद्धि हो रही है, यह समस्या जटिलतर होती जा रही है।

भारत में जनसंख्या-वृद्धि के कारण– भारत में जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं -

ऊँची जन्मदर -भारत में जन्मदर ऊँची है। इसका मुख्य कारण भारतीय जलवायु का गर्म होना है जिसके कारण यहाँ के लड़के - लड़कियाँ शीघ्र ही वयस्क हो जाते हैं।

मृत्यु दर में गिरावट -चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि होने तथा महामारीवाले संक्रामक रोगों पर नियन्त्रण हो जाने के कारण मृत्यु दर में तीव्रता से गिरावट आयी है।

प्रजनन क्षमता का अधिक होना - भारतीय स्त्रियों की प्रजनन क्षमता अधिक है अतः परिवार वृद्धि तीव्र गति से होती है।

निर्धनता - देश की अवनति दशा एवं निर्धनता के कारण भी भारत में जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहन मिला है।

शिक्षा का अभाव – अधिकतर भारतीय अन्धविश्वासी हैं। वे सन्तान को 'ईश्वर की देन'मानते हैं। पुत्र की कामना में कई पुत्रियों को जन्म देना जनसंख्या वृद्धि में सहायक है।

शरणार्थियों का आगमन - देश की स्वतन्त्रता के बाद पाकिस्तान तथा बांग्लादेश से आनेवाले लाखों - करोड़ों शरणार्थियों के कारण भी देश की जनसंख्या में वृद्धि हुई है।

बाल विवाहों की कठोरता से रोकथाम सुनिश्चित की जाय।

जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करने के उपाय – भारत में जनसंख्या को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय किये जाने चाहिए-

शिक्षा का विस्तार - अशिक्षित लोग न तो अपने भविष्य के बारे में सोच पाते हैं और न ही देश और संसार की समस्याओं तक पहुँच पाते हैं। शिक्षा के विस्तार से जनसंख्या नियन्त्रण में सहायता मिलती है।

जनसंख्या -शिक्षा को अनिवार्य विषय बनाना - विद्यालयों में जनसंख्या - शिक्षा अनिवार्य विषय के रूप में होनी चाहिए।

परिवार कल्याण कार्यक्रम का प्रचार व प्रसार - जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करने के लिए परिवार कल्याण कार्यक्रम का प्रचार व प्रसार होना आवश्यक है। अतः सरकार का उत्तरदायित्व है कि परिवार नियोजन का प्रचार करे तथा परिवार नियोजन की सभी सुविधाएँ ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों में उपलब्ध कराये।

जनसंख्या को नियन्त्रित करने हेतु विज्ञापन व सन्देशवाहन के साधनों का उपयोग - जनसंख्या वृद्धि के कारणों, परिणामों एवं जनसंख्या को नियन्त्रित करने के उपायों का विज्ञापन एवं प्रचार रेडियो, दूरदर्शन व चलचित्रों के माध्यम से ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों में करने की आवश्यकता है।

सीमित दाम्पत्य परिवारों को पुरस्कृत करना - जिन दाम्पत्य परिवारों के परिवार में एक या दो ही बच्चे हैं, ऐसे परिवारों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए। ताकि अन्य व्यक्तियों को भी सीमित परिवार की प्रेरणा मिलेगी।

जनमानस में जनसंख्या के प्रति अनुकूल चेतना का विकास करना - जन - जन में जनसंख्या के प्रति अनुकूल चेतना का विकास होने पर ही हम जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण पाने में सफल हो सकते हैं।

उपसंहार – इस प्रकार हम देखते हैं कि जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ अन्य कई और भी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस समस्या के समाधान के लिए जनसंख्या नियोजन आयोग की स्थापना होनी चाहिए। लोगों में शिक्षा का प्रसार हो खासकर महिला शिक्षा पर विशेष बल दिया जाय, परिवार कल्याण कार्यक्रमों को प्रभावशाली बनाया जाय और